संकट में सपेरे

क्रिस्टीन कार्वास्की

कभी भारत का जिक्र आते ही पश्चिम में लोग सपेरों को याद करने लगते थे। लेकिन अब इन सपेरों के लिए अपनी आजीविका कमाना मुश्किल होता जा रहा है। कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं इनके पारंपरिक कौशल के आधार पर इन्हें वैकल्पिक रोजगार दिलाने के प्रयासों में जुटी हैं लेकिन ये लोग अपने बच्चों को कुछ और हुनर सिखाना चाहते हैं।

हेमंत भट्टनागर

अमेरिकी छात्रा क्रिस्टीन कार्वास्की ने यह लेख मूल रूप से हिंदी में लिखा है। वह हिंदी अध्ययन के लिए लगभग एक साल तक जयपुर में रहने के बाद मई 2007 में अमेरिका लौट गईं।

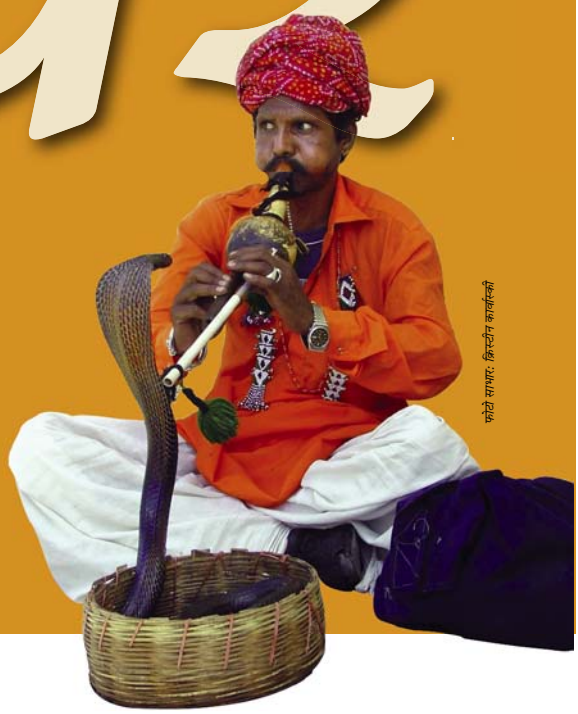

फोटो साभार: क्रिस्टीन कार्वास्की

साहिबनाथ सपेरा हर दिन अपने घर से सात किलोमीटर दूर जयपुर की उच्च-मध्य वर्ग बस्ती तिलक नगर तक जाता है। लंबे सफर के बाद वह दो रुपये वाली चाय लेकर एक पेड़ के पास बैठ जाता है और उम्मीद करता है कि शायद कोई उसकी झोली में मौजूद काले नाग के दर्शन करना चाहेगा और उसे एक-दो रुपये मिल पाएंगे। दिन अच्छा हो तो साहिबनाथ एक दिन में सौ रुपये तक कमा लेते थे लेकिन आजकल नाग पंचमी और शिव रात्रि जैसे मौकों को छोड़कर अच्छे दिन कम ही आते हैं।

आप साहिबनाथ को हर दिन उसी पेड़ के नीचे बैठा पाएंगे लेकिन वह बिना आपके कहे आपको आपने नाग नहीं दिखाएगा। भारत में अब सांपों को पकड़ने और उनके प्रदर्शन पर रोक जो है। इसी कारण अब बीन बजाकर सांपों का प्रदर्शन का सपेरों का पारंपरिक धंधा संकट में है। लेकिन लोग सपेरों को उनकी बीन और भगवा वस्त्रों से पहचान ही लेते हैं। साहिबनाथ मुझे बताते हैं कि भगवा रंग के अपने वस्त्रों को वे भगवान शिव का उपहार मानते हैं और इन्हें आग में नहीं डाला जाता। उनके समुदाय में किसी की मृत्यु होने पर भी भगवा कपड़े जलाए नहीं जाते, उन पर मिट्टी डाल दी जाती है।

बहुत से भारतीयों को इस बात पर खीझ और उकताहट होती है कि सपेरे पश्चिमी संस्कृति के सम्मोहन और कल्पना को आकर्षित करते हैं।पश्चिम में उनके चित्र भारतीय पर्यटन उद्योग के विज्ञापनों को सजाते हैं, तो उनके गीत यूरोप और अमेरिका को निर्यात होते हैं और उनके नृत्य सारी दुनिया में मशहूर होने लगे हैं। बहुत संभव है कि यदि आप किसी अमेरिकी से भारत के बारे में दो शब्द बोलने को कहें तो उनमें से सपेरा एक होगा और शायद ताजमहल दूसरा होगा। इसके बावजूद नागों, बीनों और भगवा वस्त्रों वाले इस समुदाय की हकीकत के बारे में पश्चिमी ही नहीं भारतीयों को भी बहुत कम पता है।

साहिबनाथ बताते हैं कि उनके समुदाय की उत्पत्ति गुरु गोरखनाथ और गुरु कन्हीपानाथ से हुई है। ये दोनों नाथ संप्रदाय के धार्मिक गुरु थे। सपेरों को विष ज्ञान कैसे मिला? इस बारे में साहिबनाथ एक पुरानी कथा को सुनाते हैं: गुरु कन्हीपानाथ भगवान शिव के भक्त थे। एक बार उनकी भगवान से कुछ मांगने की बारी आई तो उन्होंने विष संबंधी ज्ञान मांग लिया। गुरु कन्हीपानाथ को ही सपेरा समुदाय का आदि गुरु माना जाता है।

सपेरा समुदाय में सांप पकड़ने की विद्या और ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। साहिबनाथ ने यह ज्ञान

अपने पिता से बचपन में ही हासिल कर लिया था। वह कहते हैं, ''हमारे गुरु ने कहा था कि अगर हमारे पास सांप न होंगें तो हमें न लाभ होगा और न ही हमारे पास धन होगा।'' साहिबनाथ के अनुसार यह कथा भी प्रचलित है कि गुरु गोरखनाथ ने पकड़े गए सांपों को सिर्फ छह माह तक अपने पास रखने और फिर जंगल में छोड़ने का निर्देश दिया था और कहा था कि इससे ज़्यादा समय तक पकड़े गए सांप अपने पास रखने पर वे फिर से सांप न पकड़ पाएंगे।

साहिबनाथ ने मुझे बताया कि वे सांपों को किस तरीके से पकड़ते हैं। उन्होंने मुझे अपने शरीर पर एक घाव दिखाया और बताया कि यह उनकी पहली बार सांप पकड़ने की कोशिश का नतीज़ा है। वह बताते हैं, ''हमारे समुदाय में सांप के काटने से कोई नहीं डरता। सांप हमारे परिवार के सदस्य जैसे होते हैं। सर्दियों में तो सांप उनके साथ एक ही पलंग पर परिवार के साथ आराम करते हैं।''

साहिबनाथ बताते हैं कि उनके बच्चे बचपन से ही सांपों को छूते रहते हैं जिससे उनमें डर नहीं रहता। इसके अलावा सांपों के दांत निकाले जा चुके होते हैं और सपेरों के पास विष शामक औषधि बनाने का विशिष्ट ज्ञान होता है।

हालांकि सपेरों को सांपों के साथ काम करने के कारण ही जाना जाता है, फिर भी ये लोग इस बात को लेकर बहुत सजग हैं कि समाज उन्हें किस रूप में लेता है। साहिबनाथ को अपने व्यवसाय से संबंधित कला पर बहुत गर्व है और उस संगीत पर भी जो वे अपनी बीन पर रचते और बजाते हैं। वह कहते हैं, ''बीन संगीत एक संपेरे की कला है। हम जो कुछ भी करते हैं, बीन के बिना उसमें कोई कला नहीं है। संगीत के कारण हमें मान मिलता है और हम अच्छे लोग माने जाते हैं।''

सपेरा समुदाय मानता है कि सांपों को पकड़ना और उनके साथ काम करना उनका धर्म है लेकिन पशु अधिकारों के प्रति सजगता और भारत सरकार की रोक को देखते हुए अब वे अपने बच्चों के भविष्य को लेकर यथार्थवादी हो रहे हैं। ऐसा होने से पहले अगर कोई अपनी बेटी को विवाह के अवसर पर एक जोड़ा सांप और बीन दे देता था तो इसे बहुत अच्छा उपहार माना जाता था।

इस समुदाय के सामने अब मुश्किल यह है कि उन्हें दूसरे व्यवसायों की ज़्यादा जानकारी नहीं है और न ही वे किसी अन्य कला या कौशल में प्रशिक्षित हैं। बहर दत्ता की संस्था फ्रेंड्स ऑफ स्नेक्स एक अन्य संस्था वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के साथ मिलकर इस समस्या को हल करने का प्रयास कर रही हैं। वे सपेरों के लिए आजीविका के दूसरे साधन जुटा रहे हैं ताकि वे अपनी पारंपरिक कला और ज्ञान के बूते अपनी जीविका चला सकें।

इन संस्थाओं ने दिल्ली के जोगीनाथ समुदाय के सौ सपेरों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके पारंपरिक संगीत की प्रस्तुति का आयोजन किया। वे सपेरों को प्रशिक्षण के लिए विष विशेषज्ञों के पास भी ले गए। उन्हें उम्मीद है कि इससे सपेरों के पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक जानकारी का मेल हो सकेगा। सुश्री दत्ता कहती हैं, ''इससे सपेरे फिर से अपने व्यवसाय और कौशल पर गर्व कर पाएंगे क्योंकि अभी तो उन्हें खुद को सपेरा बतलाने में शर्म महसूस होने लगी है।''

बाएं: जयपुर में बीन बजाकर सांप का करतब दिखाता एक सपेरा। सांपों के करतब दिखाने पर रोक लगाने के बाद ऐसे दृश्य अब आसानी से देखने को नहीं मिलते।

दाएं: एक युवा सपेरा साइकिल खड़ी कर सड़क किनारे ही अपना करतब दिखाने में जुटा है। ज़्यादातर युवा सपेरों को यह ज्ञान परिवार के बड़े लोगों से मिलता है।

फोटो साभार: किशोर कार्वाल्हो